बी० ए०पार्ट-1
हिन्दी रचना

M: 9204396227

# बीती विभावरी जाग री (जयशंकर प्रसाद)

डा० अमित रुद्र प्रभाकर
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रश्न : 'बीती विभावरी जाग री' कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

'बीती विभावरी जाग री' कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक अत्यन्त ही सुन्दर कविता है। इस कविता में कवि ने प्रकृति में उषा काल के स्वरूप का बड़ा ही मनोहारी चित्र उपस्थित किया है।

कवि जयशंकर प्रसाद ने इस कविता के माध्यम से बतलाया है कि जिस प्रकार अंधकार का अंत होते ही प्रकाश की किरणें पूरे क्षितिज को आलोकित कर देती हैं और पृथ्वी दीप्तिमान हो उठती है। कवि ने इसे रूपक के माध्यम से समझाने की कोशिश करते हैं। कवि एक विरह-विदग्धा नायिका को उसके सखि के माध्यम से कहते हैं — हे सखि, रात बीत चुकी है, सब लोग निद्रा को त्याग जग गए हैं, इसलिए तू भी उठ।

यहाँ कवि का कहना है कि आलस्य एवं जड़ता को त्याग कर, हमें भी स्फूर्त हो जाना चाहिए। सखि नायिका से कहती है — देख, आकाश रूपी पनघट में उषा रूपी नागरी तारक रूपी घड़े को डूबो रही है, अर्थात सारे तारे विलीन हो रहे हैं, और प्रभात होने ही वाला है। पक्षी समुदाय मधुर नाद कर रहा है, वृक्ष एवं पौधों में नवीन पत्ते निकल आए हैं, अर्थात उन्हीं से चेतना एवं सक्रियता का उदय होता है। लताओं में लगी मुकलित कलियां अब पूर्ण विकसित हो गई हैं और उसमें नवीन रस का संचार हो रहा है। ऐसी स्थिति में तू अब भी सोयी है, जो कदापि उचित नहीं।

P.T.O.

कवि की नायिका अब भी निद्रा में मग्न है। उसके अधरों की लालिमा अब भी विद्यमान है। उसमें किसी भी प्रकार की कमी नहीं आयी है। उसके केश-पाश चंदन आदि से सुगंधमान हैं यानी उसके साज-सज्जा में कोई अंतर नहीं आया है। कहने का अर्थ यह है कि नायिका का मिलन अभी नायक से नहीं हुआ है जिसके कारण उसके श्रृंगार यथावत हैं। रात भर जगने के कारण सुबह हो जाने पर भी वह अलसायी प्रतीत होती है। उसके न उठने का कारण प्रिय मिलन इच्छा की आपूर्ति न होने का दुःख भी है।

Scanned with CamScanner